संखे० गुणं। रदि० विसे०। साद० संखे० गुणं। सोगे० संखे० गुणं। अरदि० विसे०। दुगुंछ० विसे०। भय० विसे०। कोहे० विसे०। माणे० विसे०। लोहे० विसे०। मायाए० विसे०। दाणंतराइए० विसे०। एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं त्ति। मणपज्जव० विसे०। ओहिणाण० विसे०। सुद० विसे०। मदि० विसे०। ओहिदंसण० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। असाद० संखे० गुणं। एवं देवगइदंडओ समत्तो।

(एइंदिएसु) जं पदेसग्गं संकामिज्जदि सम्मत्ते तं थोवं। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणं। अणंताणुबंधिमाणे० असंखे० गुणं। कोहे० विसे०। मायाए० विसे० लोहे० विसे०। अपच्च▣क्खाणमाणे० असंखे० गुणं। कोहे० विसे०। मायाए० विसे०। लोहे० विसे०। पच्चक्खाणमाणे० विसे०। कोहे० विसे०। मायाए० विसे०। लोहे० विसे०। केवलणाण० विसे०। पयला० विसे०। णिद्दा०❋ विसे०। पयलापयला० विसे०। णिद्दाणिद्दा० विसे०। थीणगिद्धि० विसे०। केवलदंसणा विसे०। णिरयगई० अणंत-

---

विशेष अधिक है। सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। शोकमें संख्यातगुणा है। अरतिमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। (संज्वलन) क्रोधमें विशेष अधिक है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है। संज्वलन मायामें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। इस प्रकार विशेषाधिक-क्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये। मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधि-ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। इस प्रकार देवगतिदण्डक समाप्त हुआ।

(एकेन्द्रिय जीवोंमें) जो प्रदेशाग्र सम्यक्त्वमें संक्रान्त होता है वह स्तोक है। सम्य-ग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धी मानमें विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धी क्रोधमें विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धी मायामें विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धी लोभमें विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है। अप्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। नरकगतिमें अनन्तगुणा है। देवगतिमें

▣ ताप्रतौ 'लोहे विसे०। केवलणाणे विसे०। पयला० विसे०। अपच्च-' इति पाठः। ❋ ताप्रतौ 'लोहे विसे०। केवलणाण० विसे०। पच्चक्खाणमाणे विसे०, कोहे विसे०, माया० विसे०, लोहे० विसे०। णिद्दा०' इति पाठः।

गुणं । देवगई० असंखे० गुणं । वेउव्विय० संखे० गुणं । आहार० असंखे० गुणं । मणुसगई० असंखे० गुणं । उच्चागोदे० संखे० गुणं । जसकित्ति० असंखे० गुणं । ओरालिय० संखे० गुणं । तेज० विसे० । कम्म० विसे० । तिरिक्खगई० संखे० गुणं । अजसकित्ति० संखे० गुणं । णीचागोद० संखे० गुणं । हस्स० संखे० गुणं । रदि० विसे० । सादे० संखे० गुणं । सोग० संखे० गुणं । अरदि० विसे० । णवुंस० विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसेसा० । माणसंजलण विसे० । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । दाणंतराइए० विसे० । एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति । मणपज्ज० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंस० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असादे० संखे० गुणं । णीचागोदे० विसेसाहियं । एवमेइंदियदंडओ समत्तो । एवं पदेससंकमो समत्तो ।

लेस्सा त्ति अणुयोगद्दारे तत्थ* इमाणि अट्ठ पदाणि । तं जहा– लेस्साणिक्खेवे १ लेस्साणयपरूवणा २ लेस्साणिरूवणा ३ लेस्सासंकमणणिव्वत्ती ४ लेस्सावण्णसमोदारो ५ लेस्सावण्णचउरंसे† ६ लेस्साट्ठाणपरूवणा ७ लेस्सासरीरसमोदारो चेदि ८ । एवं लेस्साणिक्खेवेत्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है । तिर्यग्गतिमें संख्यातगुणा है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेष अधिक क्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । आगे मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें विशेष अधिक है । नीचगोत्रमें विशेष अधिक है । इस प्रकार एकेन्द्रियदण्डक समाप्त हुआ । इस प्रकार प्रदेशसंक्रम समाप्त हुआ ।

लेश्या अनुयोगद्वारमें वहां ये आठ पद हैं । वे ये हैं– १ लेश्यानिक्षेप, २ लेश्यानयप्ररूपणा, ३ लेश्यानिरूपणा, ४ लेश्यासंक्रमणनिर्वृत्ति, ५ लेश्यावर्णसमवतार, ६ लेश्यावर्णचतुरंश, ७ लेश्यास्थानप्ररूपणा और ८ लेश्याशरीरसमवतार । इस प्रकार लेश्यानिक्षेप अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

---

* ताप्रतौ 'तस्स' इति पाठः । † ताप्रतौ 'लेस्साअंतरविहाणे' इति पाठः ।

लेस्साकम्मे त्ति अणुओगद्दारे दस वित्थरपदाणि । तं जहा– लेस्सापरिणामे १ लेस्सापच्चयविहाणे २ लेस्सापदविहाणे ३ लेस्सासामित्तविहाणे ४ लेस्साकालविहाणे ५ लेस्साअंतरविहाणे❋ ६ लेस्सातिव्व-मंददाए ७ लेस्साट्ठाणपरूवणा ८ लेस्साट्ठाणाणं अप्पाबहुअं ९ लेस्सागइसमोदारो १० । एवं लेस्सापरिणामे त्ति समत्तमणुओगद्दारं ।

लेस्सापरिणामे त्ति अणुओगद्दारे पंचविधियपदाणि । तं जहा– लेस्सासंकमे १ लेस्साट्ठाणसंकमे २ लेस्साट्ठाणप्पाबहुए ३ लेस्साअद्धासमोदारे ४ लेस्साअद्धासंकमे ५ । किण्हलेस्सादो संकिलेसंतो अण्णलेस्सं ण संकमदि, विसुज्झंतो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाणि ओसरदि, णीललेस्सं वा संकमदि,✻ ठाणे अणंतगुणहीणो पददि । णीलादो संकिलिस्संतो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाणि ओसरदि, किण्णलेस्सं संकमदि✻ ठाणे अणंतगुणे; तदो विसुज्झंतो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाणि ओसरइ, काउं वा संकमदि ट्ठाणे अणंतगुणहीणे । काउलेस्सादो❂ संकिलेसंतो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाणि ओसरइ✿, णीललेस्सं वा संकमदि❀ ट्ठाणे अणंतगुणे; विसुज्झंतो सट्ठाणे ओसरदि छट्ठाणपदिदाणि, तेउं वा संकमदि ट्ठाणे अणंतगुणहीणे । तेउलेस्सादो संकिलेसंतो⊗ सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाणि ओसरदि, काउं वा❁ संकमदि ट्ठाणे अणंतगुणे; विसुज्झंतो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाणि

लेश्याकर्म अनुयोगद्वारमें दस विस्तारपद हैं । वे ये हैं– १ लेश्यापरिणाम, २ लेश्याप्रत्ययविधान, ३ लेश्यापदविधान, ४ लेश्यास्वामित्वविधान, ५ लेश्याकालविधान, ६ लेश्याअन्तरविधान, ७ लेश्यातीव्र मंदता, ८ लेश्यास्थानप्ररूपणा, ९ लेश्यास्थानोंका अल्पबहुत्व और १० लेश्यागतिसमवतार । इस प्रकार लेश्यापरिणाम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

लेश्यापरिणाम अनुयोगद्वारमें पंचविधिक पद हैं। वे ये हैं– १ लेश्यासंक्रम, २ लेश्यास्थानसंक्रम, ३ लेश्यास्थानअल्पबहुत्व, ४ लेश्याद्धासमवतार और ५ लेश्याद्धासंक्रम । कृष्णलेश्यासे संक्लेशको प्राप्त होता हुआ जीव अन्य लेश्यामें संक्रमण नहीं करता, उससे विशुद्धिको प्राप्त होकर स्वस्थानमें छह स्थानोंमें पडता है अथवा नीललेश्यामें संक्रमण करता है– अर्थात् अनन्तगुणे हीन नीललेश्या रूप परस्थानमें जाता है । नीललेश्यासे संक्लेशको प्राप्त होकर स्वस्थानमें छह स्थानोंमें नीचे गिरता है अथवा अनन्तगुणे परस्थानमें कृष्णलेश्यामें संक्रमण करता है। उससे विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ स्वस्थानमें छह स्थानोंमें गिरता है, अथवा अनन्तगुणी हीन परस्थानभूत कापोतलेश्यामें संक्रमण करता है । कापोतलेश्यासे संक्लेशको प्राप्त होकर स्वस्थानमें छह स्थानोंमें नीचे पडता है, अथवा अनन्तगुणे परस्थानमें नीललेश्यामें संक्रमण करता है । उससे विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ स्वस्थानमें छह स्थानोंमें गिरता है, अथवा अनन्तगुणी हीन परस्थानभूत तेजलेश्यासे संक्रमण करता है ।

तेजलेश्यासे संक्लेशको प्राप्त होकर स्वस्थानमें छह स्थानोंमें नीचे गिरता है, अथवा अनन्तगुणे परस्थानमें कापोतलेश्यामें संक्रमण करता है । उससे विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ स्वस्थानमें

❋ ताप्रतौ 'लेस्सावण्णचउरंसे' इति पाठः। ✻ अ-काप्रत्योः 'संकमदि' इति पाठः। ❂ अप्रतौ 'उक्कस्सादो', काप्रतौ 'उस्सासादो', ताप्रतौ 'उस्सादो (काउलेस्सादो)' इति पाठः। ✿ अ-काप्रत्योः 'अइसरइ' इति पाठः। ❀ अ-काप्रत्योः 'संकमदि' इति पाठः। ⊗ अ-काप्रत्योः 'तेउसकमसंकिलेसंतो' ताप्रतौ 'तेउसंकम (लेस्सादो) संकिलेसंतो' इति पाठः। ❁ ताप्रतौ 'काउलेस्सं वा' इति पाठः।

अहिसरदि, पम्माए वा संकमदि ट्ठाणे अणंतगुणे । पम्मादो संकिलिस्संतो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाणि ओसरइ, तेउं वा संकमदि ट्ठाणे अणंतगुणहीणे; विसुज्झंतो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाणि✪ ओसरदि, सुक्कं वा संकमइ ट्ठाणे अणंतगुणे । सुक्कादो संकिलिस्संतो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाणि ओसरइ, पम्मं वा संकमदि ट्ठाणे अणंतगुणहीणे; विसुज्झंतो ण कहिं पि संकमदि ।

किण्ह-णीलाओ अप्पिदाओ कट्टु णीलाए ट्ठाणं जहण्णयं थोवं पडिग्गहट्ठाणं❀ णीलाए जहण्णयमणंतगुणं । किण्हाए जहण्णयं ट्ठाणं संकमट्ठाणं च अणंतगुणं । णीलाए जहण्णयं संकमट्ठाणमणंतगुणं । किण्हाए जहण्णयं पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं । णीलाए उक्कस्सयं पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं । किण्हाए उक्कस्सयं संकमट्ठाणमणंतगुणं। णीलाए उक्कस्सयं संकमट्ठाणं उक्कस्सयं संकिलेसट्ठाणं च अणंतगुणं । किण्हाए उक्कस्सयं पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं । किण्हाए उक्क०ट्ठाणमणंतगुणं❋ ।

लेस्सट्ठाणाणि छट्ठाणपदिदाणि असंखेज्जा लोगा । तत्थ काऊए ट्ठाणाणि थोवाणि । णीलाए ट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । किण्हाए ट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । तेऊए ट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । पम्माए ट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । सुक्काए ट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । एवमेसो समत्तो दंडओ ।

छह स्थानोंमें ऊपर जाता है, अथवा अनन्तगुण पद्मलेश्याके परस्थानमें संक्रमण करता है । पद्मलेश्यासे संक्लेशको प्राप्त होकर स्वस्थानमें छह स्थानोंमें नीचे गिरता है, अथवा अनन्तगुणी हीन परस्थानभूत तेजलेश्यामें संक्रमण करता है । उससे विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ स्वस्थानमें छह स्थानोंमें ऊपर जाता है, अथवा अनन्तगुणो परस्थानभूत शुक्ललेश्यामें संक्रमण करता है । शुक्ललेश्यासे संक्लेशको प्राप्त होकर स्वस्थानमें छह स्थानोंमें नीचे गिरता है, अथवा अनन्तगुणी हीन परस्थानभूत पद्मलेश्यामें संक्रमण करता है । उससे विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ कहींपर भी संक्रमण नहीं करता है ।

कृष्ण और नील लेश्याओंकी विवक्षा करके नीलका जघन्य स्थान स्तोक है । नीलका जघन्य प्रतिग्रहस्थान उससे अनन्तगुणा है । कृष्णका जघन्य स्थान और संक्रमस्थान अनन्तगुणा है । नीलका जघन्य संक्रमस्थान अनन्तगुणा है । कृष्णका जघन्य प्रतिग्रहस्थान अनन्तगुणा है । नीलका उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान अनन्तगुणा है । कृष्णका उत्कृष्ट संक्रमस्थान अनन्तगुणा है । नीलका उत्कृष्ट संक्रमस्थान और उत्कृष्ट संक्लेशस्थान अनन्तगुणा है । कृष्णका उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान अनन्तगुणा है । कृष्णका उत्कृष्टस्थान अनन्तगुणा है ।

छह स्थान पतित लेश्यास्थानोंका प्रमाण असंख्यात लोक है । उनमें कापोतलेश्याके स्थान स्तोक हैं । नीललेश्याके स्थान असंख्यातगुणे हैं । कृष्णलेश्याके स्थान असंख्यातगुणे हैं । तेजलेश्याके स्थान असंख्यातगुणे हैं । पद्मलेश्याके स्थान असंख्यातगुणे हैं । शुक्ललेश्याके स्थान असंख्यातगुणे हैं । इस प्रकार यह दण्डक समाप्त हुआ ।

✪ ताप्रतौ 'छट्ठाणपदाणि' इति पाठः । ❀ अ-काप्रत्योः 'पओग्गहट्ठाण', ताप्रतौ 'पओ (डि) ग्गहट्ठाणं' इति पाठः । ❋ ताप्रतौ 'किण्हाए उक्क० मणंतगुणं, किण्हाए० अणंतगुणं' इति पाठः ।

तिव्व-मंददाए दंडओ– सव्वत्थोवं काऊए जहण्णयं ट्ठाणमणंतगुणं (?)। णीलाए जहण्णयं ट्ठाणमणंतगुणं किण्हाए। जहण्णयं ट्ठाणमणंतगुणं। तेऊए जहण्णयं ट्ठाणमणंतगुणं। पम्माए जहण्णयं ट्ठाणमणंतगुणं। सुक्काए जहण्णयं ट्ठाणमणंतगुणं। काऊए उक्कस्सयं ट्ठाणमणंतगुणं। णीलाए उक्कस्सयं ट्ठाणमणंतगुणं किण्हाए उक्क० ट्ठाण-मणंत०। तेऊए उक्कस्सयं ट्ठाणमणंतगुणं। पम्माए उक्कस्सयं ट्ठाणमणंतगुणं। सुक्काए उक्कस्सयं ट्ठाणमणंतगुणं। एवं तिव्व-मंददाए दंडओ समत्तो। लेस्साकम्मे❋ त्ति समत्तमणुओगद्दारं।

सादमसादे त्ति अणुओगद्दारे सव्वत्थोवमेयंतसादं◎। एयंतअसादं संखेज्जगुणं। अणेयंतसादं असंखेज्जगुणं। अणेयंतअसादं विसेसाहियं। एसो ताव एक्को पयारो।

इमो बिदिओ दंडओ। तं जहा– जं सादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं थोवं। जं सादत्ताये बद्धं असंछुद्धं असादत्ताये✿ वेदिज्जदि तं विसेसाहियं। जमसादत्ताये बद्धं असंछुद्धं सादत्ताये☼ वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं। जमसादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिछुद्धं असादत्ताये वेदिज्जदि तं विसेसाहियं। जं

तीव्र-मंदताका दण्डक– कपोतलेश्याका जघन्य स्थान सबमें स्तोक है। नीललेश्याका जघन्य स्थान अनन्तगुणा है। कृष्णलेश्याका जघन्य स्थान अनन्तगुणा है। तेजलेश्याका जघन्य स्थान अनन्तगुणा है। पद्मलेश्याका जघन्य स्थान अनन्तगुणा है। शुक्ललेश्याका जघन्य स्थान अनन्तगुणा है। कपोतलेश्याका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है। नीललेश्याका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है। कृष्णलेश्याका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है। तेजोलेश्याका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है। पद्मलेश्याका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है। शुक्ललेश्याका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है। इस प्रकार तीव्र-मंदताका दण्डक समाप्त हुआ। लेश्याकर्म अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

सात-असात अनुयोगद्वारमें एकान्तसात सबमें स्तोक है। एकान्तअसात संख्यातगुणा है। अनेकान्तसात असंख्यातगुणा है। अनेकान्तअसात विशेष अधिक है। यह एक पहला प्रकार है।

यह दूसरा दण्डक है जो इस प्रकार है– जो सात स्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त और अप्रतिक्षिप्त होता हुआ सात स्वरूपसे वेदा जाता है वह स्तोक है। जो सात स्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त (और अप्रतिक्षिप्त) होता हुआ असात स्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है। जो असात स्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त (और अप्रतिक्षिप्त) होता हुआ सात स्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है। जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त और अप्रतिक्षिप्त होता हुआ असात स्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है। जो सात स्वरूपसे

❋ प्रतिषु 'लेस्सासंकमे' इति पाठः। ◎ अ-काप्रत्योः 'मेयंतसादं वा' इति पाठः। ✿ ताप्रतौ 'असंछुद्ध' (अपडिच्छुद्धं-) असादत्ताए' इति पाठः। ☼ ताप्रतौ '-छुद्धं (अपडिच्छुद्धं) सादत्ताये' इति पाठः।

सादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तमसंखेज्जगुणं । जं सादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं विसेसाहियं । (जमसादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं) । जमसादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं विसेसाहियं । एवं सादासादे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

दीहे रहस्से✪ त्ति अणुयोगद्दारे इमा मग्गणा । तं जहा– पयडिदीहं ट्ठिदिदीहं अणुभागदीहं पदेसदीहं ति चउव्विहं दीहं । एवं रहस्सं पि चउव्विहं । एदेसिमट्ठण्हं पि अप्पाबहुअपरूवणाए कदाए दीहे❋ रहस्से त्ति अणुओगद्दारं समत्तं होइ ।

भवधारणे त्ति अणुओगद्दारे इमा मग्गणा । तं जहा– कदरेण कम्मेण भवो धारिज्जदि ? आउएण कम्मेण धारिज्जदि । एत्थ अप्पाबहुअपरूवणा कायव्वा । एवं भवधारणे त्ति समत्तमणुओगद्दारं ।

पोग्गलअत्ते त्ति अणुओगद्दारे इमा गाहा मग्गिदव्वा – ममत्ति०✱

आहारे परिभोयं परिग्गहग्गय तहा च परिणामा ।
आदेसपमाणत्ता (?) पुण अट्ठविहा पोग्गला अत्ता ॥ १ ॥
अत्ता मवुत्ति परिभोग परि गहणे तथा च परिणामे ।
आहारे गहणे पुण चउव्विहा पोग्गला अत्ता ॥ २ ॥

बांधा जाकर संक्षिप्त और प्रतिक्षिप्त होकर सात स्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है । जो सात स्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त और प्रतिक्षिप्त होता हुआ असात स्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है । (जो असात स्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त और प्रतिक्षिप्त होता हुआ सात स्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है ।) जो असात स्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त और प्रतिक्षिप्त होता हुआ असात स्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है । इस प्रकार सातासात अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

दीर्घ-ह्रस्व अनुयोगद्वारमें यह मार्गणा है । यथा– प्रकृतिदीर्घ, स्थितिदीर्घ, अनुभागदीर्घ और प्रदेशदीर्घ इस प्रकार दीर्घ चार प्रकारका है । इसी प्रकारसे ह्रस्व भी चार प्रकारका है । इन आठोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करनेपर दीर्घ-ह्रस्व अनुयोगद्वार समाप्त होता है ।

भवधारण अनुयोगद्वारमें यह मार्गणा है । यथा– किस कर्मके द्वारा भव धारण किया जाता है ? आयु कर्मके द्वारा धारण किया जाता है । यहां अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार भवधारण अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

पुद्गलात्त अनुयोगद्वारमें इस गाथाकी मार्गणा करना चाहिये–– ममत्ति०

आहार, परिभोग, परिग्रहगत तथा परिणामस्वरूपसे पुद्गल ग्रहण किये जाते हैं । परन्तु आदेशप्रमाणकी अपेक्षा (?) आठ प्रकारके पुद्गल ग्रहण किये जाते हैं ॥ १ ॥

ममत्व, परिभोग, परिग्रहण तथा परिणाम रूपसे चार प्रकारके पुद्गल ग्रहण होते हैं । तथा आहार और ग्रहणमें चार प्रकारके पुद्गल ग्रहण किये जाते हैं ॥ २ ॥

✪ ताप्रतौ 'दीहरहस्से' इति पाठः । ❋ अ-काप्रत्योः 'अप्पाबहुअ परूवणाए कदाए दीए', ताप्रतौ 'अप्पाबहुअं परूवणाए कदा । एवं दीहे' इति पाठः । ✱ ताप्रतौ 'मग्गिदव्वा ममत्ति०।' इति पाठः ।

एत्थ एदेसिमप्पाबहुअं कायव्वं। एवं पोग्गलअत्ते त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

णिधत्तमणिधत्ते त्ति अणुओगद्दारे इहमट्ठपदं। तं जहा-- जमोकड्डिज्जदि❀ उक्कड्डिज्जदि, परपयडिं ण संकामिज्जदि उदये ण दिज्जदि पदेसग्गं✪ तं णिधत्तं णाम। तव्विवरीयमणिधत्तं। णिधत्तं पुण पयडीए केवडिभायेण अवणिज्जदि? पलिदोवमस्सअसंखेज्जदिभाएण पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभाएण। जा उअसामणाये मग्गणा सा चेव एत्थ वि कायव्वा। एत्थतणपदाणमप्पाबहुअपरूवणा च जाणिदूण कायव्वा। एवं णिधत्तमणिधत्ते त्ति समत्तमणुओमद्दारं।

णिकाचिदमणिकाचिदं ति अणुओगद्दारे कधमट्ठपदं♠? जं पदेसग्गं ण वि ओकड्डिज्जदि (ण वि उक्कड्डिज्जदि)▣ ण वि संकामिज्जदि ण वि उदए दिज्जदि तं णिकाचिदं णाम। तव्विवरीयमणिकाचिदं। तं पयडीए पलिदोवमस्स असंखे० भागपडिभागियं। जा उवसामणाए मग्गणा सा चेव एदेसु दोसु कायव्वा। जं पदेसग्गं गुणसेडीए दिज्जदि तं थोवं। (जं) उवसामिज्जदि पदेसग्गं तं असं० गुणं। जं णिधत्तिज्जदि तमसंखे० गुणं। जं णिकाचिज्जदि तमसंखे० गुणं। जमधापवत्तसंकमेण संकामिज्जदि तमसंखे० गुणं।

यहां इनका अल्पबहुत्व करना चाहिये। इस प्रकार पुद्गलात्त अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

निधत्त अनिधत्त अनुयोगद्वारमें यह अर्थपद है। यथा-- जो प्रदेशाग्र अपकर्षको प्राप्त कराया जाता है और उत्कर्षको भी प्राप्त कराया जाता है, किन्तु न तो परप्रकृति रूपमें संक्रान्त किया जाता है और न उदयमें दिया जाता है उसका नाम निधत्त है। इससे विपरीत अनिधत होता है। निधत्त प्रकृतिके कितनेंवे भागसे अपनीत किया जाता है? वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग व पल्योपमके वर्गमूलके असंख्यातवें भागसे अपनीत किया जाता है। जो उपशामनामें मार्गणा है वही यहां भी करना चाहिये। यहांके पदोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा भी जानकर करना चाहिये। इस प्रकार निधत्त-अनिधत्त अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

निकाचित-अनिकाचित अनुयोगद्वारमें अर्थपद कैसा है? जो प्रदेशाग्र न अपकृष्ट किया जाता है, न उत्कृष्ट किया जाता है, न संक्रान्त किया जाता है, और न उदयमें भी दिया जाता है उसे निकाचित कहते हैं। इससे विपरीत अनिकाचित है। वह प्रकृतिके पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रतिभागवाला है। जो उपशामनामें मार्गणा है उसे ही इन दोनोंमें करना चाहिये। जो प्रदेशाग्र गुणश्रेणि रूपसे दिया जाता है वह स्तोक है। जो प्रदेशाग्र उपशान्त किया जाता है वह असंख्यातगुणा है। जो प्रदेशाग्र निधत्त स्वरूप किया जाता है वह असंख्यातगुणा है। जो निकाचित अवस्थाको प्राप्त कराया जाता है वह असंख्यातगुणा है। जो अधःप्रवृत्तसंक्रमसे संक्रमणको प्राप्त कराया जाता है वह असंख्यातगुणा है।

❀ प्रतिषु 'तमोकड्डिज्जदि' इति पाठः। ✪ प्रतिषु 'पदेसट्ठं' इति पाठः। ♠ प्रतिषु 'कदमट्ठपद' इति पाठः। ▣ अ-काप्रत्योः 'ओक्कड्डदिज्जदि', ताप्रतौ 'ओकड्डदि, (ण वि उक्कड्दि-)' इति पाठः। अतोऽग्रे अ-काप्रत्यो पच्छिमक्खधाणुयोगद्दारान्तरान्तर्गतः 'अंतोमुहुत्त' पर्यन्तोऽयं संदर्भः स्खलितः।

महावाचयाणं खमासमणाणं उवदेसेण सव्वत्थोवाणि कसाउदयट्ठाणाणि। ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असं० गुणाणि। पदेसउदीरयअज्झवसाणट्ठाणाणि असंखे० गुणाणि। पदेससंकमणाअज्झवसाणाणि असंखे० गुणाणि। उवसामयअज्झवसा० असं० गुणाणि। णिधत्तमज्झवसाणाणि असं० गुणाणि। णिकाचणज्झवसा० असं० गुणाणि। एत्थ अणंतराणंत(र)गुणगारो असं० लोगा। एवं णिकाचिदं त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

कम्मट्ठिदि त्ति अणुयोगद्दारे एत्थ महावाचया अज्जणंदिणो संतकम्मं करेंति✿। महावाचया ट्ठिदिसंतकम्मं पयासंति। एवं कम्मट्ठिदि त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

पच्छिमक्खंधे त्ति अणुयोगद्दारे तत्थ इमा मग्गणा- आउअस्स अंतोमुहुत्ते सेसे▣ तदा आवज्जिदकरणं करेदि। आवज्जिदकरणे कदे तदो केवलिसमुग्घादं करेदि- पढमसमए दंडं करेदि। ठिदीए असंखेज्जे भागे हणदि। अप्पसत्थकम्मं सव्वं अणंतभागे अणुभागखंडएण हणदि। तदो बिदियसमए कवाडं करेदि। तत्थ सेसियाए ट्ठिदीए असंखेज्जे भागे हणदि। सेसस्स च✪ अणुभागस्स अणंतभागे हणदि। तदो तदियसमए मंथं⊛ करेदि। तत्थ वि सेसियाए ट्ठिदीए असंखेज्जे भागे हणदि। सेसस्स च अणुभागस्स अणंतभागे हणदि। तदो चउत्थसमए लोगं पूरेदि✱। लोगे पुण्णे एगा❋

महावाचक क्षमाश्रमणके उपदेशके अनुसार कषायउदयस्थान सबसे स्तोक हैं। स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं। प्रदेशउदीरक अध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं। प्रदेशसंक्रम अध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं। उपशामक अध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं। निधत्त अध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं। निकाचन अध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं। यहां अनन्तर-अनन्तर गुणकारका प्रमाण असंख्यात लोक है। इस प्रकार निकाचित अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

कर्मस्थिति अनुयोगद्वारमें यहां महावाचक आर्यनन्दी सत्कर्मकी प्ररूपणा करते हैं और महावाचक (नागहस्ती) स्थितिसत्कर्मको प्रकाशित करते हैं। इस प्रकार कर्मस्थिति अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

पश्चिमस्कन्ध इस अनुयोगद्वारमें वहां यह मार्गणा है-- आयुके अन्तर्मुहूर्त मात्र शेष रहनेपर तब आवर्जित करणको करता है। आवर्जित करणके कर चुकनेपर फिर केवलिसमुद्घातको करता है। इसमें प्रथम समयमें दण्डसमुद्घातको करता है। स्थितिके असंख्यात बहुभागको नष्ट करता है। सब अप्रशस्त कर्मके अनन्त बहुभागको अनुभागकाण्डक द्वारा नष्ट करता है। पश्चात् द्वितीय समयमें कपाटसमुद्घातको करता है। उसमें शेष स्थितिके असंख्यात बहुभागको नष्ट करता है। शेष अनुभागके भी अनन्त बहुभागको नष्ट करता है। तत्पश्चात् तृतीय समयमें मंथ समुद्घातको करता है। उसमें भी शेष स्थितिके असंख्यात बहुभागको नष्ट करता है। शेष अनुभागके भी अनन्त बहुभागको नष्ट करता है। तदनंतर

✿ अ-काप्रत्योः 'करेंति करेंति', ताप्रतौ '(करेंति)' इति पाठः। ▣ ताप्रतौ '(आउअस्स-) अंतोमहुत्तसेसे' इति पाठः। ✪ प्रतिषु 'सेसं च' इति पाठः। ⊛ अ-काप्रत्योः 'मत्थं' इति पाठः। ✱ अ-काप्रत्योः 'लोगो चरेदि', ताप्रतौ 'लोगो च (पू रेदि' इति पाठः। ❋ प्रतिषु 'एदा' इति पाठः।

जोगवग्गणा । सेसियाए ट्ठिदीए असंखेज्जे भागे हणदि, सेसस्स च अणुभागस्स अणंते भागे हणदि । महावाचयाणमज्जमंखुसमणाणमुवदेसेण लोगे पुण्णे आउअसमं करेदि । महावाचयाणमज्जणंदीणं उवदेसेण अंतोमुहुत्तं ट्ठवेदि संखेज्जगुणमाउआदो । एदे चत्तारिसमए अप्पसत्थस्स अणुभागस्स अणुसमओवट्ठणा एयसमइयो चरिमखंडयघादो । एत्तो सेसियाये ट्ठिदीए संखेज्जभागो ट्ठिदिखंडयं हणदि । सेसस्स च अणुभागस्स अणंतभागे हणदि । एत्तो पाये अंतोमुहुत्तिया ट्ठिदिखंडयस्स अणुभागखंडयस्स उक्कीरणद्धा । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण वचिजोगं णिरुंभदि अंतोमुहुत्तेण । एत्तो अंतोमुहुत्तं गंतूण मणजोगं णिरुंभदि✿ अंतोमुहुत्तेण । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण उस्सास-णिस्सासं णिरुंभदि अंतोमुहुत्तेण । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण कायजोगं णिरुंभदि अंतोमुहुत्तेण । कायजोगं च णिरुंभमाणो❀ इमाणि करणाणि करेदि– पढमसमए अपुव्वफद्दयाणि करेदि पुव्वफद्दयाणं हेट्ठदो । आदिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदाणमसंखेज्जदिभाग–मोकड्डुदि । जीवपदेसाणमसंखेज्जदिभागमोकड्डुदि । अंतोमुहुत्तेण कायजोगपुव्वफद्द–याणि करेदि असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए, जीवपदेसाणमसंखेज्जगुणाए सेडीए । अपुव्वफद्दयाणि सेडीए असंखेज्जदिभागो, सेडिवग्गमूलस्स वि असंखेज्जदिभागो✱ ।

चतुर्थ समयमें लोकपूरणसमुद्घातको करता है । लोकके पूर्ण होनेपर एक योगवर्गणा होती है । यहां शेष स्थितिके असंख्यात बहुभागको और शेष अनुभागके अनन्त बहुभागको नष्ट करता है । महावाचक आर्यमंक्षु श्रमणके उपदेशके अनुसार लोकके पूर्ण होनेपर (शेष अघाति कर्मोंको) आयु कर्मके समान करता है । किन्तु महावाचक आर्यनन्दीके उपदेशके अनुसार आयु कर्मसे संख्यातगुणी अन्तर्मुहूर्त मात्र स्थितिको स्थापित करता है । इन चार समयोंमें अप्रशस्त अनुभागकी प्रतिसमय अपवर्तना और एक समयरूप अन्तिम स्थितिकाण्डकका घात होता है । यहां शेष स्थितिके संख्यात बहुभागको नष्ट करता है । शेष अनुभागके भी अनन्त बहुभागको नष्ट करता है । यहां स्थितिकाण्डक और अनुभागकाण्डकका अन्तर्मुहूर्त मात्र उत्कीरणकाल होता है । यहांसे तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त जाकर अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा वचनयोगका निरोध करता है । यहांसे अन्तर्मुहूर्त जाकर अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा मनयोगका निरोध करता है । तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त जाकर अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा उच्छ्वास-निःश्वासका निरोध करता है । पश्चात् अन्तर्मुहूर्त जाकर काययोगका अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा निरोध करता है । काययोगका निरोध करता हुआ इन करणोंको करता है– प्रथम समयमें पूर्व स्पर्धकोंके नीचे अपूर्वस्पर्धकोंको करता है । आदि वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करता है । जीवप्रदेशोंके संख्यातवें भागका अपकर्षण करता है । अन्तर्मुहूर्तमें काययोगके अपूर्वस्पर्धकोंको असंख्यातगुणहीन श्रेणिसे और जीवप्रदेशोंके असंख्यातगुणी श्रेणिसे करता है । अपूर्वस्पर्धक श्रेणिके असंख्यातवें भाग और श्रेणिवर्गमूलके भी असंख्यातवें भाग होते हैं । अपूर्वस्पर्धक

✿ ताप्रतौ 'मणजोगं पि उक्कड्डिज्जदि णिरुभदि' इति पाठः । ❀ अ-काप्रत्योः 'णिरुभमाणे' इति पाठः। ✱ अप्रतौ '-मूलस्स दि असंखे० भागो', का-ताप्रत्योः 'मूलस्स असखे० भागो' इति पाठः।

पुव्वफद्दयाणमसंखेज्जदिभागो अपुव्वफद्दयाणि । एवमपुव्वफद्दयकरणं समत्तं ।

एत्तो अंतोमुहुत्तं किट्टीओ करेदि । अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदाणमसंखेज्जदिभागमोकड्डुदि ✿ । जीवफद्दयपदेसाणं असंखेज्जदिभागमोकड्डिज्जदि । अंतोमुहुत्तं किट्टीओ करेदि असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए । जीवपदेसे असंखेज्जगुणाए सेडीए ओकड्डुदि । किट्टीदो किट्टीए गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । किट्टीओ सेडीए असंखेज्जदिभागो, अपुव्वफद्दयाणमसंखेज्जदिभागो । किट्टिकरणे णिट्ठिदे तदो से काले अपुव्वफद्दयाणमसंखेज्जदिभागो णस्सेदि ▣ । अंतोमुहुत्तं किट्टिग❀दजोगो सुहुमकिरियं अपडिवादि✪ज्झाणं झायदि । किट्टीणं चरिमसमए असंखेज्जा भागा णस्सिंति♥ । जोगम्हि णिरुद्धम्हि आउअसमाणि कम्माणि (करेदि) । तदो अंतोमुहुत्तं सेलेसिं पडिवज्जदि, समुच्छिण्णकिरियं अणियट्टिज्झाणं झायदि । सेलेसिं पडिवज्जदि त्ति कम्मविप्पमुक्को सिद्धिं गच्छदि । एवं पच्छिमक्खंधे त्ति समत्तमणुओगद्दारं ।

अप्पाबहुए त्ति जमणुओगद्दारं एत्थ महावाचयखमासमणा संतकम्ममग्गणं❊ करेंदि । उत्तरपयडिसंतकम्मेण दंडओ । तं जहा– सव्वत्थोवा आहारसंतकम्मिया♠ । सम्मत्तस्स संतकम्मिया असंखेज्जगुणा । सम्मामिच्छत्तस्स संतकम्मिया विसेसाहिया ।

पूर्वस्पर्धकोंके असंख्यातवें भाग होते हैं । इस प्रकार अपूर्वस्पर्धककरण समाप्त हुआ ।

यहां अन्तर्मुहूर्त कृष्टियोंको करता है– अपूर्वस्पर्धकोंकी आदि वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करता है । जीवस्पर्धकप्रदेशोंके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करता है । अन्तर्मुहूर्त काल असंख्यातगुणी हीन श्रेणिसे कृष्टियोंको करता है । जीवप्रदेशोंका असंख्यातगुणित श्रेणिसे अपकर्षण करता है । कृष्टिसे कृष्टिके गुणकारका प्रमाण पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । कृष्टियां श्रेणिके असंख्यातवें भाग और अपूर्वस्पर्धकोंके असंख्यातवें भाग मात्र होती हैं । कृष्टिकरणके समाप्त होनेपर तदनन्तर कालमें अपूर्वस्पर्धकों (और पूर्वस्पर्धकों) के असंख्यातवें भाग का नाश करता है । अन्तर्मुहूर्त कृष्टिगतयोग होकर सूक्ष्मक्रिया-प्रतिपाती ध्यानको ध्याता है । कृष्टियोंके अन्तिम समयमें असंख्यात बहुभाग नष्ट हो जाता है । योगके निरुद्ध हो जानेपर कर्मोंको आयुके बराबर करता है । तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें शैलेश्यभावको प्राप्त होता है व समुच्छिन्नक्रियानिवृत्ति ध्यानको ध्याता है । शैलेश्यभावको प्राप्त हुआ कि कर्मोंसे रहित होकर सिद्धिको प्राप्त होता है । इस प्रकार पश्चिमस्कन्ध अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

जो अल्पबहुत्व अनुयोगद्वार है यहां महावाचक क्षमाश्रमण (नागहस्ती) सत्कर्ममार्गणाको करते हैं । उत्तरप्रकृतिसत्कर्मदण्डककी प्ररूपणा इस प्रकार है– आहारसत्कर्मिक सबसे स्तोक हैं । सम्यक्त्वके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं ।

✿ प्रतिषु '-मोवट्टुदि ' इति पाठः । ▣ अ-काप्रत्योः '-भागो', ताप्रतौ '-भागो (णस्सदि-) ।' इति पाठः । ❀ प्रतिषु 'कदं' इति पाठः । ✪ अ-काप्रत्योः 'पडिवादि' इति पाठः । ♥ अप्रतौ 'णसति', काप्रतौ 'णंसंति' इति पाठः । ♠ अ-का-प्रत्योः 'संतकम्मं मग्गणं' इति पाठः । ❊ अ-काप्रत्योः 'सव्वत्थोवं आहार० संतकम्मिय' इति पाठः ।

मणुस्साउअस्स संतकम्मिया असंखेज्जगुणा। णिरयाउअस्स संतकम्मिया असंखेज्जगुणा। देवाउअस्स संतकम्मिया असंखेज्जगुणा। देवगइसंतकम्मिया असंखेज्जगुणा❋। णिरय-गइसंतकम्मिया विसेसाहिया। वेउव्विय० विसेसाहिया। उच्चागोद० अणंतगुणा। मणुसगइ० विसे०। तिरिक्खाउअस्स० विसे०। अणंताणुबंधिउक्क० (विसे०)। मिच्छत्त० विसे०। अट्ठकसायाणं० विसे०। थीणगिद्धितिय० तिरिक्खगइणामाए० विसे०। णवुंसयवेद० विसे०। इत्थि० विसे०। छण्णोकसाय० विसे०। पुरिस० विसे०। कोहसंजल० विसे०। माणसंज० विसे०। मायासंज० विसे०। लोभसंज० विसे०। णिद्दा-पयलाणं विसे०। पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-पंचंतराइयाणं तुल्ला विसेसाहिया। ओरालिय-तेजा-कम्मइय-अजसकित्ति-णीचगोदाणं विसे०। असादस्स० विसे०। साद० विसे०। जसकित्तीणं (?) विसे०। एवमोघदंडओ समत्तो।

मोहणीयस्स पयडिट्ठाणसंतकम्मेण सव्वत्थोवा पंचसंतकम्मियाΩ। एक्किस्से विसेसाहिया। दोण्हं विसेसा०। तिण्हं विसे०। एक्कारसण्हं विसे०। बारसण्हं विसे०। चउण्हं० तेरसण्हं संखेज्जगुणं। बावीसाए संखे० गुणं। तेवीसाए संखे० गुणं।

मनुष्यायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं। नारकायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं। देवायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे है। देवगति नामकर्मके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं। नरकगति नाम-कर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। वैक्रियिकशरीर नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। उच्चगोत्रके सत्कर्मिक अनन्तगुणे हैं। मनुष्यगति नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। तिर्यगायुके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। अनन्तानुबन्धिचतुष्कके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। मिथ्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। आठ कषायोंके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। स्त्यानगृद्धित्रिक और तिर्यग्गति नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। नपुंसकवेदके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। स्त्रीवेदके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। छह नोकषायोंके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। पुरुषवेदके सत्कर्तिमक विशेष अधिक हैं। संज्वलन क्रोधके सत्कर्तिमक विशेष अधिक हैं। संज्वलन मानके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। संज्वलन मायाके सत्कर्किम विशेष अधिक हैं। संज्वलन लोभके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। निद्रा और प्रचलाके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायके सत्कर्मिक तुल्य व विशेष अधिक हैं। औदारिकशरीर, तैजसशरीर, कार्मणशरीर, अयशकीर्ति और नीच-गोत्रके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। असातावेदनीयके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। साता-वेदनीयके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। यशकीर्तिके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ।

मोहनीयके प्रकृतिस्थानसत्कर्मकी अपेक्षा पांच प्रकृतिरूप स्थानके सत्कर्मिक सबमें स्तोक हैं। एकके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। दोके विशेष अधिक हैं। तीनके विशेष अधिक हैं। ग्यारहके विशेष अधिक हैं। बारहके विशेष अधिक हैं। चारके विशेष अधिक हैं। तेरहके संख्यातगुणे है।

❋ अ-काप्रत्योर्नोपलभ्यते वाक्यमिदम्। 'पंचसम्मत्तधम्मिय (पंचसंतकम्मिया)' इति पाठः।

Ω अका-प्रत्योः 'पंचसम्मत्तधम्मिया', ताप्रतौ

पंचवीसाए असंखे० गुणं । एक्कवीसाए असंखे० गुणं । चउवीसाए असंखे० गुणं । अट्ठवीसाए असंखे० गुणं । छव्वीसाए अणंगुणं । एवमोघदंडओ समत्तो ।

उत्तरपयडिट्ठिदिसंतकम्मेण जहण्णेण पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-सादासाद-सम्मत्त-लोहसंजलण-इत्थि⊡-णवुंसयवेद.आउचउक्क-मणुसगइ-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदी थोवा । जट्ठिदी तत्तिया✱ चेव । जत्तिया (णिद्दाणिद्दा-) पयलापयला✿-थीणगिद्धि-णिद्दा-पयला-मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-बारसकसाय-णिरय-गइ-तिरिक्खगइ-देवगइ-पंचसरीर-अजसकित्ति-णीचागोदाणं जहण्णिया ट्ठिदी तत्तिया चेव । जट्ठिदी संखेज्जगुणा । मायासंज० जह० असंखेज्जगुणा । माणसंजल० विसे० । कोहसंज० विसे० । पुरिसवेद० संखे० गुणा । छण्णोकसायणं संखे० गुणा । जट्ठिदी विसे० । एवमोघदंडओ चेव ।

उत्तरपयडिअणुभागसंतकम्मेण जहण्णेण सव्वमंदाणुभागं लोहसंजलणं । माया० अणंतगुणा । माण० अणंतगुणं । कोह० अणंतगुणं । विरियंतराइय० अणंतगुणं । सम्मत्त० अणंतगुणं । चक्खु० अणंतगुणं । सुदाणुभागं❁ अणंतगुणं । मदिणाण अणंत-गुणं । अचक्खु० अणंतगुणं । ओहिणाण० अणंतगुणं । ओहिदंसण० अणंतगुणं ।

बाईसके संख्यातगुणे हैं । तेईसके संख्यातगुणे हैं । सत्तावीसके असंख्यातगुणे हैं । इक्कीसके असंख्यातगुणे हैं । चौबीसके असंख्यातगुणे हैं । अट्ठाईसके असंख्यातगुणे हैं । छब्बीसके अनन्तगुणे हैं । इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ ।

उत्तरप्रकृतिस्थितिसत्कर्मकी अपेक्षा जघन्यसे पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, साता व असाता वेदनीय, सम्यक्त्व, संज्वलन लोभ, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, चार आयु कर्म, मनुष्यगति, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थिति स्तोक है । ज-स्थिति उतनी मात्र ही है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, निद्रा, प्रचला, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, बारह कषाय, नरकगति, तिर्यग्गति, देवगति, पांच शरीर, अयशकीर्ति और नीचगोत्र; इनकी जघन्य स्थिति उतनी मात्र ही है । ज-स्थिति संख्यातगुणी है । संज्वलन मायाकी जघन्य स्थिति असंख्यात-गुणी है । संज्वलन मानकी जघन्य स्थिति विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधकी जघन्य स्थिति विशेष अधिक है । पुरुषवेदकी जघन्य स्थिति संख्यातगुणी है । छह नोकषायोंकी जघन्य स्थिति संख्यातगुणी है । इन सबकी जस्थिति क्रमशः विशेष अधिक है । इस प्रकार ओघदण्डक ही है ।

उत्तरप्रकृतिसत्कर्मकी अपेक्षा जघन्यतः सबसे मद अनुभागवाला संज्वलन लोभ है । संज्वलन माया उससे अनन्तगुणी है । संज्वलन मान अनन्तगुणा है । सज्वलन क्रोध अनन्तगुणा है । वीर्यान्तराय अनन्तगुणा है । सम्यक्त्व प्रकृति अनन्तगुणी है । चक्षुदर्शना-वरण अनन्तगुणा है । श्रुतज्ञानावरण अनन्तगुणा है । मतिज्ञानावरण अनन्तगुणा है । अचक्षु-दर्शनावरण अनन्तगुणा है । अवधिज्ञानावरण अनन्तगुणा है । अवधिदर्शनावरण अनन्तगुणा

⊡ प्रतिषु 'सम्मत्त-मणुसगइणामाए इत्थि' इति पाठः । ✱ ताप्रतौ 'तत्तियाए' इति पाठः ।

✿ अ-काप्रत्योः 'जत्तिया पयलापयला', ताप्रतौ 'जत्तिया (णिद्दाणिद्दा) पयलापयला' इति पाठः ।

❁ अप्रतौ 'मंदाणुभागं', काप्रतौ 'मंदमंदाणुभाग', ताप्रतौ 'मद०' इति पाठः ।

परिभोग० अणंतगुणं । (भोग० अणंतगुणं ।) लाहंतराइय० अणंतगुणं । दाणंतराइय० अणंतगुणं । विरियंतराइय० अणंतगुणं । (पुरिस० अणंतगुणं ।) इत्थिवेद※० अणंतगुणं । णवुंस० अणंतगुणं । मणपज्ज० अणंतगुणं । सम्मामिच्छत्त० अणंतगुणं । केवलणाण० केवलदंसणावरण० अणंतगुणं । पयला० अणंतगुणं । णिद्दा० अणंतगुणं । हस्स० अणंतगुणं । रदि० अणंतगुणं । दुगुंछा० अणंतगुणं । भय० अणंतगुणं । सोग० अणंतगुणं । अरदि० अणंतगुणं । अणंताणुबंधिमाण० अणंतगुणं । कोह० विसे० । मायाए० विसे० । लोह० विसे० । वेउ० अणंतगुणं । तिरिक्खाउ० अणंतगुणं । तिरिक्खाणुपुव्वि० अणंतगुणं । णिरयगइ० अणंतगुणं । मणुसगइ० अणंतगुणं । देवगइ० अणंतगुणं । उच्चागोद० अणंतगुणं । असाद० अणंतगुणं । णिरयाउ० अणंतगुणं । ओरालिय० अणंतगुणं । तेज० अणंतगुणं । कम्मइय० अणंतगुणं । तिरिक्खगइ० अणंतगुणं । णीचागोद० अणंतगुणं। अजसकित्ति० अणंतगुणं । अणादेज्ज० अणंतगुणं । पयलायपयला अणंतगुणं । णिद्दाणिद्दा० अणंतगुणं । थीणगिद्धि० अणंतगुणं । अपच्चक्खाणमाण० अणंतगुणं । कोह० विसे० । माया० विसे० । लोह० विसे० । मिच्छत्त० अणंतगुणं । जसकित्ति० अणंतगुणं । एवमोघदंडओ समत्तो ।

है । परिभोगान्तराय अनन्तगुणा है । (भोगान्तराय अनन्तगुणा है ।) लाभान्तराय अनन्तगुणा है । दानान्तराय अनन्तगुणा है । वीर्यान्तराय अनन्तगुणा है । पुरुषवेद अनन्तगुणा है । स्त्रीवेद अनन्तगुणा है । नपुंसकवेद अनन्तगुणा है । मनःपर्ययज्ञानावरण अनन्तगुणा है । सम्यग्मिथ्यात्व अनन्तगुणा है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरण अनन्तगुणे हैं । प्रचला अनन्तगुणी है । निद्रा अनन्तगुणी है । हास्य अनन्तगुणा है । रति अनन्तगुणी है । जुगुप्सा अनन्तगुणी है । भय अनन्तगुणा है । शोक अनन्तगुणा है । अरति अनन्तगुणी है । अनन्तानुबन्धी मान अनन्तगुणा है । अनन्तानुबन्धी क्रोध विशेष अधिक है । अनतानुबन्धी माया विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी लोभ विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीर अनन्तगुणा है । तिर्यगायु अनन्तगुणी है । तिर्यगानुपूर्वी अनन्तगुणी है । नरकगति अनन्तगुणी है । मनुष्यगति अनन्तगुणी है । देवगति अनन्तगुणा है । उच्चगोत्र अनन्तगुणा है । असातावेदनीय अनन्तगुणा है । नारकायु अनन्तगुणी है । औदारिकशरीर अनन्तगुणा है । तैजसशरीर अनन्तगुणा है । कार्मणशरीर अनन्तगुणा है । तिर्यग्गति अनन्तगुणी है । नीचगोत्र अनन्तगुणा है । अयशकीर्ति अनन्तगुणी है । अनादेय अनन्तगुणा है । प्रचलाप्रचला अनन्तगुणी है । निद्रानिद्रा अनन्तगुणी है । स्त्यानगृद्धि अनन्तगुणी है । अप्रत्याख्यानावरण मान अनन्तगुणा है । क्रोध विशेष अधिक है । माया विशेष अधिक है । लोभ विशेष अधिक है । मिथ्यात्व अनन्तगुणा है । यशकीर्ति अनन्तगुणी है । इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ ।

※ काप्रतौ 'परिभोगंतराइय० अणंतगुणं । लाहंतराइयं अणंतगुणं । दाणंतराइय अणंतगुणं । वीरियंतराइय० अणंतगुणं । इत्थिवेद, ', ताप्रतौ 'परिभोग० लाहंतराइय० वीरियंतराइय० इत्थिवेद० ' इति पाठः ।

उत्तरपयडिसंतकम्मेण उक्कस्सपदेसग्गेण सव्वत्थोवं अपच्चक्खाणमाणे उक्कस्स-पदेसग्गं। (कोहे) विसे०। मायाए विसे०। लोहे विसे०। पच्चक्खाणमाणे विसे०। कोहे विसे०। मायाए विसे०। लोहे विसे०❋। अणंताणुबंधिमाणे विसे०। कोहे विसे०। मायाए विसे०। लोहे विसे०। सम्मामिच्छत्ते विसे०। सम्मत्ते विसे०। मिच्छत्ते विसे०। केवलणाणावरणे विसे०। पयला० विसे०। णिद्दा० विसे०। पयलापयला० विसे०। णिद्दाणिद्दा० विसे०। थीणगिद्धि० विसे०। केवलदंसणा-वरण० विसे०। णिरयाउअम्मि अणंतगुणो। देवाउअम्मि तत्तिया चेव। तिरिक्खाउ-अम्मि विसे०। मणुस्साउअम्मि विसे०। णिरयगइ० असंखे० गुणा। आहार० असंखे० गुणा। ओरालिय० विसे०। तेज० विसे०। कम्मइय० विसे०। अजस-कित्ति० संखे० गुणा। देवगइ० विसे०। मणुसगइ० विसे०। हस्स० संखेज्जगुणं। रदि० विसेसाहियं। इत्थि० संखे० गुणं। सोग० विसे०। अरदि० विसे०। णवुंस० विसे०। दुगुंछ० विसे०। भय० विसे०। एवं विसेसाहिय❂कमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति। ओहिणाण० विसे०। मणपज्जव० विसे०। ओहिदंसण० विसे०। चक्खु०

उत्तरप्रकृतिसत्कर्म रूप उत्कृष्ट प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अप्रत्याख्यानावरण मानमें उत्कृष्ट प्रदेशाग्र सबसे स्तोक हैं। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धी मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक हैं। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। सम्यग्मिथ्यात्वमें विशेष अधिक हैं। सम्यक्त्वमें विशेष अधिक है। मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। नारकायुमें अनन्तगुणा है। देवायुमें उतना ही है। तिर्यगायुमें विशेष अधिक है। मनुष्यायुमें विशेष अधिक है। नरकगतिमें असंख्यातगुणा है। आहारकशरीरमें असंख्यात-गुणा है। औदारिकशरीरमें विशेष अधिक है। तैजसशरीरमें विशेष अधिक है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। देवगतिमें विशेष अधिक है। मनुष्यगतिमें विशेष अधिक है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है। शोकमें विशेष अधिक है। अरतिमें विशेष अधिक है। नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। इस प्रकार विशेषाधिक विशेषाधिक-क्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये। अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मनःपर्यय-ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें

❋ ताप्रतौ नोपलभ्यते वाक्यमिदम्। ❂ अ-काप्रत्योः 'भय० विसे० एवं विसेसाहिया २ एवं विसे-साहिया-', ताप्रतौ 'भय० विसे०, विसेसाहिओ, एवं विसेसाहिय-' इति पाठः।

विसे० । अचक्खु० विसे० । कोहसंजल० विसे० । माणसंज० विसे० । मायासंज० विसे० । जसकित्ति० विसे० । णीचागोद० विसे० । उच्चागोद० विसे० । लोहसंजणण० विसेसाहियं । एवमोघदंडओ समत्तो ।

णिरयगदीए उक्कस्से सम्मामिच्छत्ते✪ पदेसग्गं थोवं । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं । कोहे० विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । अणंताणुबंधिमाणे विसे० । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । सम्मत्ते विसे० । मिच्छत्ते विसे० । केवलणाण० विसे० । पयला० विसे० । णिद्दा० विसे० । पयलापयला० विसे० । णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धि० विसे० । केवलदंसण० विसे० । अण्णदरे आउए अणंतगुणं । णिरयगइ० असंखे०गुणं । आहार० असंखे०गुणं▣ । जसकित्ति० संखे० गुणं । वेउव्विय० विसे० । ओरालिय०✿ विसे० । तेज० विसे० । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखे० गुणं । देवगइ० विसे० । तिरिक्खगइ० विसे० । मणुसगइ० विसे० । हस्स० संखेज्जगुणं । रदि० विसे० । साद० संखे० गुणं । इत्थि० संखेज्जगुणं । सोग० संखे० गुणं ।

विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । यशकीर्तिमें विशेष अधिक है । नीचगोत्रमें विशेष अधिक है । उच्चगोत्रमें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभम विशेष अधिक है । इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ ।

नरकगतिके उत्कर्षसे सम्यग्मिथ्यात्वमें स्तोक प्रदेशाग्र है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । सम्यक्त्वमें विशेष अधिक है । मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अन्यतर आयुकर्ममें अनन्तगुणा है । नरकगति नामकर्ममें असंख्यातगुणा है । आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें विशेष अधिक है । औदारिकशरीरमें विशेष अधिक है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । देवगतिमें विशेष अधिक है । तिर्यग्गतिमें विशेष अधिक है । मनुष्यगतिमें विशेष अधिक है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें

✪ प्रतिषु ' सम्मामिच्छते ' इति पाठः । ▣ ताप्रतौ ' अणंतगुणा ' इति पाठः ।

✿ अप्रतौ 'विदिय ', का-मप्रत्योः ' बादिय० ', ताप्रतौ ' वेदिय ' इति पाठः ।

अरदि✽० विसे० । णवुंसय० विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । पुरिस० विसे० । माणसंजल० विसे० । कोहे० विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । पुणो पुणो विसेसाहियं, एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइं ति । मणपज्जव० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । सादे० संखे० गुणं । उच्चागोदे० विसे० । णीचागोदे० विसे० । एवं णिरयग✪इदंडओ समत्तो ।

जहण्णेण पदेससंतकम्मेण सम्मत्ते⁂ थोवं संतकम्मं । सम्मामिच्छत्ते असंखेज्जगुणो । अणंताणुबंधिमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए० विसे० । लोहे विसे० । मिच्छत्ते असंखे० गुणं । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसेसाहिओ । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे० विसे० । पयलापयला० असंखे० गुणा । णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धि० विसे० । केवलणाण० असंखे० गुणं । पयला० विसे० । णिद्दा० विसे० । केवलदंसण०

संख्यातगुणे संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । पुनः पुनः विशेष अधिक, इस प्रकार विशेष अधिक क्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें विशेष अधिक है । नीचगोत्रमें विशेष अधिक है । इस प्रकार नरकगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

जघन्य प्रदेशसत्कर्मकी अपेक्षा सत्कर्म सम्यक्त्वमें स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें असंख्यातगुणा है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है ।

✽ अप्रतौ 'रदि०', काप्रतौ त्रुटितोऽत्र पाठः ताप्रतौ '(अ) रदि०' इति पाठः ।

✪ अप्रतौ 'एव णिरयाउणिरयगई-', काप्रतौ णिरयाउणिरयगई-', ताप्रतौ 'णिरयाउ० । णिरयगइ-' इति पाठः । ⁂ प्रतिषु 'सम्मत्त' इति पाठः ।

विसे० । ओहिणाण० असंखे० गुणं[**] । ओहिदंसण० विसे० । णिरयगइ० असंखे० गुणं । देवगइ० असंखे० गुणं । वेउव्विय० संखे० गुणं । आहार० असंखे० गुणं । मणुसगइ० संखे० गुणं । उच्चागोद० संखे० गुणं । णिरयाउअम्मि असंखे० गुणं । देवाउअम्मि विसेसाहियं । तिरिक्खाउअम्मि विसे० । मणुस्साउअम्मि विसे० । कोहसंजलण० असंखे० गुणं । माणसंजल० विसे० । पुरिस० विसे० । मायासंजल० विसे० । तिरिक्खगइ० असंखे० गुणा । इत्थि० असंखे० गुणा । णवुंस० विसे० । णीचागोद० असंखेज्जगुणं । ओरालिय० असंखे० गुणं । जसकित्ति० असंखे० गुणं । तेज० विसे० । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखेज्जगुणं । हस्स० संखे० गुणं । रदि० विसे० । सादे संखे० गुणं । सोगे संखे० गुणं । अरदि० विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । लोहसंजलणं विसेसाहियं । एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति । मणपज्जव० विसेसाहियं । सुद० विसे० । मदि० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु विसे० । असादे संखेज्जगुणं । एवमोघदंडओ समत्तो ।

णिरयगदीए सव्वत्थोवं सम्मत्ते जहण्णयं पदेसग्गं संतकम्मं । सम्मामिच्छत्ते असंखेज्जगुणं । अणंताणुबंधिमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे

केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें असंख्यातगुणा है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । नरकगतिमें असंख्यातगुणा है । देवगतिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है । नारकायुमें असंख्यातगुणा है । देवायुमें विशेष अधिक है । तिर्यगायुमें विशेष अधिक है । मनुष्यायुमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें असंख्यातगुणा है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । तिर्यग्गतिमें असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । नीचगोत्रमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेषाधिक क्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । आगे मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ ।

नरकगतिमें जघन्य प्रदेशसत्कर्म सम्यक्त्व प्रकृतिमें सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है ।

[**] ताप्रतौ 'अणंतगुणा' इति पाठः ।

विसे० । अचक्खु० असंखे० गुणं । पयलापयला० असंखे० गुणं । णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धि० विसे० । अपच्चक्खाणमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । (कोहे विसे० ।) मायाए विसे० । लोहे विसे० । केवलणाण० विसे० । पयला० विसे० । णिद्दा० विसे० । केवलदंसण० विसे० । आहार० अणंतगुणं । णिरयाउअम्मि असंखे० गुणं । देवगदीए असंखे० गुणं । मणुसगई० असंखे० गुणं । तिरिक्खगई० संखे० गुणं । णिरयगई० संखे० गुणं । उच्चागोद० संखे० गुणं* । इत्थि० संखे० गुणं । णवुंस० संखे० गुणं । णीचागोद० संखे० गुणं । जसकित्ति० असंखे० गुणं । ओरालिय० संखे० गुणं । तेज० विसे० । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखे०☼ गुणं । पुरिस० संखे० गुणं । हस्स०संखे० गुणं । रदि० विसे० । सादे० संखे० गुणं । सोगे० संखे० गुणं । अरदि०विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । माणसंजलण० विसे० । कोहसंज० विसे० । मायाए विसे० । लोहसंजलण० विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० । विरियंतराइय० विसे० । मणपज्जव० विसे० ।

मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें असंख्यातगुणा है । प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । (क्रोधमें विशेष अधिक है ।) मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । आहारकशरीरमें अनन्तगुणा है । नारकायुमें असंख्यातगुणा है । देवगतिमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा है । तिर्यग्गतिमें संख्यातगुणा है । नरकगतिमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । नपुंसकवेदमें संख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । लाभान्तरायमें विशेष अधिक है । भोगान्तरायमें विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणमें

---

* अतोऽग्रे प्रतिषु 'तिरिक्खगई० असंखे० गुणं' इत्येदधिकं वाक्यमुपलभ्यते ।

☼ अप्रतौ 'असंखे०' इति पाठः ।

ओहिणाण० विसे० ।सुद० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असादे० संखेज्जगुणा । एवं णिरयगइदंडओ समत्तो ।

तिरिक्खगदीए सव्वत्थोवं सम्मत्ते जहण्णपदेससंतकम्मं । सम्मामिच्छत्ते असंखेज्ज-गुणं । अणंताणुबंधिमाणे असंखेज्जगुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । मिच्छत्ते असं० गुणं । पयलापयला० असंखे० गुणं । णिद्दाणिद्दा० संखे० गुणं । थीण-गिद्धि० विसे० । अपच्चक्खाणमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे० विसे० । ओहिणाण० विसे० । केवलणाण० विसे० । पयला० विसे० । णिद्दा० विसे० । केवल-दंसण० विसे० । णिरयगदीए अणंतगुणं । देवगदीए असंखे० गुणं । वेउव्विय० संखे० गुणं । आहार० असंखे० गुणं । मणुसगदीए संखेज्जगुणं । उच्चागोद० संखे० गुणं । तिरिक्खाउअम्मि असंखे० गुणं । मणुस्साउअम्मि असंखे० गुणं । देवणिरयाउअम्मि असंखे० गुणं । ओरालिय० असंखे० गुणं । तिरिक्खगदीए संखे० गुणं । इत्थि० संखे० गुणं । णवुंसय० संखे० गुणं । पुरिस० विसे० । जसकित्ति० असंखे० गुणं । तेज० संखे० गुणं । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखे० गुणं । हस्स० विसे० । रदि०

विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शना-वरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यात-गुणा है । इस प्रकार नरकगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यग्गतिमें जघन्य प्रदेशसत्कर्म सम्यक्त्वमें सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यात-गुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है । निद्रानिद्रामें संख्यातगुणा है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । केवल-ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । नरकगतिमें अनन्तगुणा है । देवगतिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है । तिर्यगायुमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यायुमें असंख्यातगुणा है । देवायु और नारकायुमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें असंख्यात-गुणा है । तिर्यग्गतिमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । नपुंसकवेदमें संख्यातगुणा है । पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । यशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें संख्यातगुणा है । कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । हास्यमें विशेष अधिक

विसे० । सादे संखे० गुणं । सोगे संखे० गुणं । अरदि० विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । माणसंजल० विसे० । कोहसंज० विसे० । मायासंज०विसे०। लोहसं० विसे० । दाणंतराइय० विसे० । एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति । मणपज्जव० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुदणा० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । *अचक्खु० विसे० । चक्खु०विसे०। असादे०संखेज्जगुणं । एवं तिरिक्खगइदंडओ समत्तो ।

देवगदीए जहण्णेण सम्मत्ते पदेससंतकम्मं थोवं । सम्मामिच्छत्ते पदेससंतकम्मं असंखेज्जगुणं । अणंताणुबंधिमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । मिच्छत्ते असंखे० गुणं । पयलापयला० असंखे० गुणं । णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धि०विसे० । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे०। मायाए विसे० । लोहे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । केवलणाण० विसे० । पयला० विसे० । णिद्दा० विसे० । केवलदंसण० विसे० । आहार० अणंतगुणं । देवाउअम्मि असंखे० गुणं । तिरिक्ख-मणुसाउअम्मि असंखे० गुणं । णिरयगदीए असंखेज्जगुणं । तिरिक्खगदीए असंखे० गुणं । णवुंस०

है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेषाधिकक्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । आगे मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार तिर्यग्गतिदण्डक समाप्त हुआ ।

देवगतिमें जघन्यसे प्रदेशसत्कर्म सम्यक्त्वमें स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें प्रदेशसत्कर्म असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । प्रचला-प्रचलामें असंख्यातगुणा है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । आहारकशरीरमें अनन्तगुणा है । देवायुमें असंख्यातगुणा है । तिर्यगायु और

---

* ताप्रतौ नास्तीदं वाक्यम् ।

असंखे० गुणं । णीचागोदे० संखे० गुणं । इत्थि० असंखेज्जगुणं । देवगईए असंखे० गुणं । वेउव्विय० संखे० गुणं । मणुसगदीए असंखे० गुणं । उच्चागोदे असंखे० गुणं । जसकित्ति० असखे० गुणं । ओरालिय० संखे० गुणं । तेज० विसे० । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखे० गुणं । पुरिस० संखे० गुणं । हस्स० संखे० गुणं । रदि० विसे० । सादे० संखे० गुणं । सोगे० संखे० गुणं । अरदीए विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । माणसंजलण० विसे० । कोहसंज० विसे० । मायासंज० विसे० । लोहसं० विसे० । दाणंतराइए विसेसाहियं । एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति । केवलणाण० विसे० । मणपज्ज० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असादे० संखे० गुणं । एवं देवगइदंडओ समत्तो ।

मणुसगदीए सव्वत्थोवं सम्मत्ते पदेससंतं जहण्णयं । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणं । अणंताणुबंधिमाणे असंखेज्जगुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । मिच्छत्ते असंखे० गुणं । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे विसे० ।

मनुष्यायुमें असंख्यातगुणा है । नरकगतिमें असंख्यातगुणा है । तिर्यग्गतिमें असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदमें असंख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है । देवगतिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यागुणा है । औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेषाधिकक्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार देवगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

मनुष्यगतिमें जघन्य प्रदेशसत्कर्म सम्यक्त्वमें सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें

मायाए विसे० । लोहे विसे० । पयलापयला० असंखे० गुणं । णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धि० विसे० । केवलणाण० असंखे गुणं । पयला० विसे० । णिद्दा० विसे० । केवलदंसण० विसे० । ओहिणाण० अणंतगुणं । ओहिदंसण० विसे० । णिरयगइ० असंखे० गुणं । वेउव्विय० संखे० गुणं । आहार० असंखे० गुणं । मणुसाउअम्मि असंखे० गुणं । तिरिक्खाउअम्मि असंखे० गुणं । कोह-संजलण० असंखे० गुणं । मायासंज० विसे० । पुरिस० विसे । माणसंज०✽ विसे० । णिरय-देवाउअम्मि विसे० । तिरिक्खगईए असंखे० गुणं । इत्थि० असंखे० गुणं । णवुंस० विसे० । णीचागोदे० असंखे० गुणं । मणुसगइ० असंखे० गुणं । ओरालिय० असंखे० गुणं । उच्चागोदे० असंखे० गुणं । जसकित्ति० असंखे० गुणं । तेज० संखे० गुणं । कम्मइय० विसे० । अजसगित्ति० संखे० गुणं । हस्स० संखे० गुणं । रदि० विसे० । सादे संखे० गुणं । सोगे संखे० गुणं । अरदि० विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । लोहसंजल० विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० । विरियंतरा-

---

विशेषअधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। केवल-ज्ञानावरणमें असंख्यातगुणा है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें बिशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें अनन्तगुणा है। अवधिदर्शना-वरणमें विशेष अधिक है। नरकगतिमें असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है। आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है। मनुष्यायुमें असंख्यातगुणा है। तिर्यगायुमें असंख्यातगुणा है। संज्वलन क्रोधमें असंख्यातगुणा है। संज्वलन मायामें विशेष अधिक है। पुरुषवेदमें विशेष अधिक है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। नारकायु और देवायुमें विशेष अधिक है। तिर्यग्गतिमें असंख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है। नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है। नीचगोत्रमें असंख्यातगुणा है। मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें असंख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरमें संख्यातगुणा है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। साता-वेदनीयमें संख्यातगुणा है। शोकमें संख्यातगुणा है। अरतिमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है। मनःपर्यय-

---

✽ ताप्रतौ 'कोहसंजलण० असंखे० गुणा। माणसं० विसे०। पुरिस० विसे०। मायासंजलण०' इति पाठः।

इय० विसे० । मणपज्जय० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असादे संखे० गुणं । एवं मणुसगइदंडओ समत्तो ।

एइंदिएसु जहण्णेण सव्वत्थोवं सम्मत्ते जहण्णपदेससंतकम्मं । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणं । मिच्छत्ते असंखे० गुणं । अणंताणुबंधिमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे विसे० । मायाए विसेसा० । लोहे । विसे० । केवलणाण० विसे० । पयला० विसे० । णिद्दा० विसे० । पयलापयला० विसे० । ※णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धि० विसे० । केवलदंसण० विसे० । णिरय-गइ० अणंतगुणं । देवगइ० अणंतगुणं♣ । वेउव्विय० संखे गुणं । आहार० असंखे० गुणं । मणुसगइ० संखे० गुणं । उच्चागोदे संखे० गुणं । मणुसाउअम्मि असंखे० गुणं । जसकित्ति० असंखे० गुणं । ओरालिय० संखे० गुणं । तेज० विसे० । कम्मइय० विसे० तिरिक्खगई०संखे० गुणं । अजसकित्ति० विसे० । पुरिस० संखे०गुणं । इत्थि० संखे० । गुणं । हस्स० संखे० गुणं । रदि विसे० । सोग० संखे० गुणं । सादे✡ विसे० ।

ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार मनुष्यगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

एकेन्द्रियोंमें जघन्यसे जघन्य प्रदेशसत्कर्म सम्यक्त्वमें सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वम असंख्यातगुणा है । मिथ्यात्वमें संख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यात-गुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामे विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । केवल-दर्शनावरणमें विशेष अधिक है । नरकगतिमें अनन्तगुणा है । देवगतिमें अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें संख्यात-गुणा है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है । मनुष्यायुमें असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यात-गुणा है । औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है । तिर्यग्गतिमें संख्यातगुणा है । अयशकीर्तिमें विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । शोकमें संख्यातगुणा है । सातावेदनीयमें विशेष अधिक है । अरतिमें विशेष

※ ताप्रतौ नास्तीदं वाक्यम् ।　♣ ताप्रतौ 'असंखे० गुणा' इति पाठः ।

✡ अस्य स्थाने अ-ताप्रत्योः 'पदेस०', काप्रतौ 'पुरिस०' इति पाठः ।

अरदि० विसे०। णवुंस० विसे०। दुगुंछ० विसे०। भय० विसे०। माणसंजल० विसे०। कोह० विसे०। माया० विसे०। लोह० विसे०। दाणंतराइए विसे०। लाहंत० विसे०। भोगंत० विसे०। परिभोगंत० विसे०। विरियंतरा विसे०। मणपज्जव० विसे०। ओहिणाण० विसे०। सुद० विसे०। मदि० विसे०। ओहिदंस० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। असादे संखेज्जगुणं। णीचागोदे जहण्णयं पदेससंतकम्मं विसेसाहियं। एवमेइंदियदंडओ समत्तो।

एवं चउवीसदिमअणुयोगद्दारं समत्तं।

अधिक है। नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है। संज्वलन मायामें विशेष अधिक है। संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है। दानान्तरायम विशेष अधिक है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है। मन:पर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। नीचगोत्रमें जघन्य प्रदेशसत्कर्म बिशेष अधिक है। इस प्रकार एकेन्द्रियदण्डक समाप्त हुआ।

इस प्रकार चौबीसवाँ अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।